Impact Factor-8.632 (SJIF) ISSN-2278-9308

Volume-B

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March-24

(CDLXX) 470

किन्नर विमर्श

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr. Sujitsingh Parihar
Dept. of Hindi,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science
Parbhani, Dist.- Parbhani,

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

INDEX

No.	Title of the Paper — Authors' Name	Page No.
1	किन्नरों के जीवन का दस्तावेज (नीरजा माधव के 'यमदीप'उपन्यास के विशेष संदर्भ में) — प्रो. बेवले ए. जे.	1
2	हिंदी कविता और किन्नर विमर्श — डॉ. सुजितसिंह परिहार	4
3	तुलसीदास के रामचरित मानस में 'किन्नर' — प्रो. डॉ. हाशमबेग मिर्जा, सिनगरवार पांडूरंग गिरजप्पा	8
4	हिंदी कविता और किन्नर विमर्श — प्रियंका अशोक जैसवार	15
5	किन्नर समाज का त्रासद जीवन : एक चिंतन — प्रो. डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड	19
6	किन्नर जीवन समस्याओं से अभिशप्त — पटेल निर्मलाबहन इच्छुभाई, डॉ. महेश एम.पटेल	22
7	हिंदी उपन्यासों में तृतीय लिंग की सामाजिक और आर्थिक स्थिति — डॉ पूर्णिमा श्रीनिवासन, श्रीदेवी	26
8	हिंदी कविताओं में किन्नर विमर्श — प्रा. डॉ. हनुमंत दत्तु शेवाळे	29
9	'सडक' और 'तमन्ना' फिल्म में चित्रित किन्नर जीवन — प्रा. डॉ. देशपांडे वैशाली	34
10	नीरजा माधव का उपन्यास 'यमदीप' में किन्नरों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक चुनौतियां — अर्चना बलवंत देशमुख	37
11	हिंदी कहानी और किन्नर विमर्श — प्रा.डॉ.सरिता मंजू सिंधी	39
12	यमदीप : किन्नरों की संघर्षगाथा — प्रा. डॉ.पुरुषोत्तम बापूराव व्यवहारे	42
13	समाजका पिछडा वर्ग किन्नर समुदाय — प्रो. डॉ. वंदन बापुराव जाधवज	46
14	मैं क्यों नहीं 'उपन्यास में किन्नर विमर्श। — प्रा.आनंद लोखंडे	50
15	किन्नर समाज का सफरनामा (नाला सोपारा: विशेष संदर्भ) — डॉ सुरैया खान	54
16	किन्नर विमर्श : स्वरुप एवं अवधारणा — प्रो. डॉ. नरसिंगदास ओमप्रकाशजी बंग	58
17	तृतीय पंथियों के जीवन का संघर्षपूर्ण दस्तावेज : तीसरी ताली उपन्यास — डॉ.जयंत ज्ञानोबा बोबडे	61
18	गुलाम मंडी उपन्यास में चित्रित किन्नर समुदाय का जीवन संघर्ष — प्रा. डॉ.पठाण खातून बेगम अकबर खाँन	66
19	किन्नर की जीवन और समस्याएं — ईश्वरी. ए	72
20	हिंदी उपन्यासों में किन्नर जीवन — डॉ. रमेश विठोबा कांबळे	77
21	'तीसरी ताली' किन्नर समाज के आजीविका के दर्द का दस्तावेज	81

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal

Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CDLXX) 470-B

ISSN : 2278-9308 March , 2024

हिंदी उपन्यासों में तृतीय लिंग की सामाजिक और आर्थिक स्थिति

डॉ पूर्णिमा श्रीनिवासन
शोध निर्देशिका
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी एडवांस स्टडीज,
पल्लावरम, चेन्नई

श्रीदेवी
शोधार्थी
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी एडवांस स्टडीज,
पल्लावरम, चेन्नई

sridevipalani21@gmail.com फोन नं. 99529 51435

भगवान के सृष्टि में सभी एक समान है। लेकिन मनुष्य आपस में कई तरह के भेदभाव करता है। मनुष्य जाति, रंग, वर्ण, वर्ग आदि सभी में विभाजित हुआ है जिसके चलते वह आदिवासी, दलित, तृतीय लिंग, आदि में भी बांट गया । इस समाज ने तय किया कि इन-इन वर्गों के लोग निर्धारित कार्य करने चाहिए। यह समाज दबे कुचले वर्गों को और दबा कर रखता है। अल्पसंख्यक होने के कारण किन्नर वर्ग इससे बहुत प्रभावित होती है। हमारे देश में हिजड़ों की संख्या पन्द्रह लाख के आसपास है। किन्नर को समाज उभयलिंग, हिजड़ा, मौसी आदि नामों से पुकारता है।

किन्नर को चार शाखाएँ बाँट सकते हैं। जन्मजात किन्नर को बुचरा कहते हैं। जो स्वयं किन्नर समूह में निर्मित होते है उस नीलिमा कहते है। जो लोग मानसिक तौर पर किन्नर समूह ने विनिर्मित होने चाहते हैं उसे मानसा कहते है। जो लोग शारीरिक रूप से अक्षम होने से किन्नर समुदाय में जुड़े तो उसे हंसा कहते हैं।

प्राचीन काल में किन्नरों का सकारात्मक भूमिका था । रामायण में भगवान श्री राम ने किन्नरों की भक्ति भावना से अभिभूत होकर आशीर्वाद देते हुए कहा कि तुम्हारा आशीर्वाद मंगलकारी होगा।

"जथाजोगु करि विनय प्रणाम, बिदा किये सब सानुज रामा।।
नारि पुरूष लघु मध्य बड़ेरे, सब सम्मानित पाणिनि फेरे।।"[1]

महाभारत में किन्नर लोगों ने अपना महत्वपूर्ण भूमिका दिया है । अज्ञातवास में अर्जुन ने 'बृहन्नला' नाम में किन्नर रूप धारण किया। 'शिखंडी' महाभारत की विशेष पात्र है। अर्जुन और नाग कन्या का उलूपी की संतान 'इरवान' किन्नरों के भगवान माने जाते हैं । प्राचीन से लेकर मध्यकालीन तक भारत में किन्नरों को हिंदू और मुसलमान शासकों के अंतपुर और निजी हरमों में रानियों की पहरेदारी के लिए रखा जाता था।

तृतीय लिंगी मध्यकालीन तक सम्मान जनक जीवन जीते थे वहीं वर्तमान आधुनिक समाज द्वारा नकारे जा रहे हैं । ब्रिटिश शासन काल में तृतीय लिंग की व्यक्तित्व, व्यवहार और गतिविधियों से आशंकित होकर उन्हें क्रिमिनल ट्राइब्स ऐक्ट अधिनियमों के अंतर्गत अपराधी बना दिया गया। स्वतंत्रता मिलने के बाद किन्नरों को क्रिमिनल ट्राइब्स ऐक्ट या ज़रायम पेशा जातियों की सूची से हटा दिया गया है। लंबी लड़ाई के बाद 15 अप्रैल 2014 को उच्चतम न्यायालय ने तीसरे लिंग के रूप में उनके अधिकारों को मान्यता दी और सभी आवेदनों में तीसरे लिंग का उल्लेख करना अनिवार्य कर दिया। "न्यायमूर्ति के.एस राधाकृष्णन् और न्यायमूर्ति ए.के सीकरी की पीठ ने अपने फैसले में किन्नरों को इस दिशा इस देश का नागरिक के रूप में शिक्षा, रोजगार और सामाजिक बराबरी हासिल करने का पूरा अधिकार देने की वकालत की।"[2] सरकार ने उन्हें पूरा विशेषाधिकार दिया है लेकिन उन तक यह पूरी तरह नहीं पहुंच पाया है। आज तक वे शैक्षणिक, स्वास्थ्य तथा रोजगार के मामले में आज भी पीछे है।

शिक्षा सभी के जीवन को उज्जवल करता है। अगर तृतीय लिंग को शिक्षा प्राप्त का अधिकार मिल गया तो वह भी सभ्य जीवन जी सकते हैं। शिक्षा प्राप्त होने से उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा। चित्रा मुद्गल जी के उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स

नंबर 203 नालासोपारा' में शिक्षा के महत्व के बारे में तृतीय लिंग विनोद ने अपनी सहेली पूनम से अभिव्यक्त करती है कि "पढ़ाई ही हमारे मुक्त का रास्ता है। कोई रास्ता ही नहीं छोड़ गया है हमारे लिए। हम महाभारत काल में तो है नहीं कि कोई चमत्कारी यक्ष स्थूलकर्ण हमें अपना पौरुष प्रदान कर 'अन्य' के अभिशाप से हमें मुक्त कर देगा।"[3]

हर व्यक्ति की ताकत और कमजोरी उसका परिवार होता है। वह अपने सुख-दुख, गुस्सा, क्रोध, नफरत सभी अपने परिवारवालों से साझा करता है। अगर किसी व्यक्ति को अपने परिवार का समर्थन है तो वह बड़े समस्याओं को भी संभाल सकता है। परिवार में तृतीय लिंग को बड़े बुजुर्गों से लेकर सभी उनको स्वीकार करें तो उनके जीवन में जरूरी परिवर्तन आएगा। भगवंत अनमोल कृत ज़िंदगी 50-50 उपन्यास में तृतीय लिंग सूर्या को उसके बापा अनमोल, माँ आशिका, दादी पूरे परिवार स्वीकृत किए। सूर्या आत्मविश्वास से दुनिया को सामना किया। वह प्राइवेट डिटेक्टिव एजेंसी खोलने के लिए तैयार हो जाते हैं। अनमोल सोचता है "मैंने उसे कभी खुद के चश्मे से देखने की कोशिश नहीं की बल्कि हमेशा उसके नजरिये से उसे देखने का प्रयास किया। यही तो दुनिया है, हम अपने हिसाब से दूसरों के लिए फैसला करते रहते हैं जबकि हम उनके फैसला उनके ऊपर छोड़ना चाहिए या कम से कम उनके हिसाब से फैसले लेने चाहिए।"[4]

तृतीय लिंग जन्म लेते ही घरवालों की अवहेलना से तड़पते है। अपने बारे में जानने के बाद, वे खुद अपने तृतीय लिंग समुदाय में बस जाते है। सामान्यत: तृतीय लिंगी अपनी जीवन निर्वाह सिर्फ ताली बजाना, नाचना, गाना और भीख मांगने जैसे काम में करते हैं। समाज तृतीय लिंग की लिंग विकृत के कारण कोई नौकरी देने के लिए तैयार नहीं है। उन्हें अपनी पेट भरने के लिए कोई रास्ता ही नहीं है, इसलिए वे भिक्षा माँगने की विवश हो जाते हैं। भूख एक ऐसी कमजोरी है कि किसी भी मनुष्य को उसके आत्मसम्मान में गिरावट लाने में मजबूर कर देता है। किसी भी व्यक्ति अपनी पवित्रता को देने से बेहतर भीख मांगना अच्छा मानता है। महेंद्र भीष्म जी के उपन्यास 'मैं पायल' में तृतीय लिंग जुगनी घर से भागकर ट्रेन में यात्रा करते समय कई संघर्षों सामना करती है। तृतीय लिंग जुगनी से सभी पुरुष दुर्व्यवहार करते हैं। नादान तृतीय लिंग जुगनी अपने पेट भरने के लिए काम करना चाहती है। लेकिन उसकी अलैंगिक शरीर को देखकर उसके कोई काम नहीं देते है। तृतीय लिंग जुगनी अपनी पेट भरने के लिए भीख मांगने को भी तैयार हो जाती है। "पेट की भूख क्यों नहीं करा लेती। जब कोई काम नहीं दे रहा था तब मैंने पेट भरने के लिए के लिए भीख मांगनी शुरू कर दी थी। पाँच दस पैसे जुड़कर इतना तो हो ही जाता था कि मुझे भूखा नहीं रहना पड़ता था। रात आपने पुराने हड्डी के टाट के बोरे में मैं घुसकर सो जाती थी।"[5]

समाज के लोग किन्नर के व्यवहार से, आकर से हिचकिचाते हैं। समाज के सोच में कई बदलाव आये हैं। लेकिन कुछ शिक्षित लोग तृतीय लिंग को हेय दृष्टि से ही देखते हैं। अगर तृतीय लिंग सामान्य अस्पताल जाते हैं तो डॉक्टर और नर्स भी उनके साथ अछूत जैसे व्यवहार करते हैं। उन्हें छूने के लिए भी झिझकते हैं। रेनू बहल के उपन्यास 'मेरे होने में क्या बुरा है' में तृतीय लिंग सितारा अपनी चेली शिखा से कहती है तृतीय लिंग लोग को सिर्फ नाचना, गाना, बधाई देना, देह व्यापार करना है अगर वे अपना अधिकार को मांगते हैं तो समाज उसे अस्वीकार कर देते हैं। तृतीय लिंग के संघर्षमय जीवन के बारे में बताती है "पढ़ लिख के डॉक्टर, नर्स भी हमें अछूत समझते हैं, अच्छी तरह हाथ लगाने, मुआयना करने से भी हिचकिचाते हैं।"[6]

समाज में जाति, रंग, वर्ण, व्यवसाय आदि के आधार पर ही लोगों को सामाजिक प्रतिष्ठा मिलती है। सामाजिक प्रतिष्ठा सदियों से हम पर हावी रही है। पहले जमाने में स्त्री और पुरुष के बीच लैंगिक समानता अधिक रही। इसे तोड़कर स्त्रियों अपनी पहचान के लिए आगे आकर सफलता हासिल कर रहीं हैं। तृतीय लिंग को घर से लेकर पूरी दुनिया तक अपनी पहचान के लिए संघर्ष करना पड़ता है। इस समाज में मौजूद लैंगिक स्टीरियोटाइप्स को तोड़कर तृतीय लिंग अपने आप सामाजिक प्रतिष्ठा में स्थाई करना चाहिए। उच्च परिवार के लोग समाज में अपनी

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CDLXX) 470-B
ISSN : 2278-9308
March , 2024

प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए तृतीय लिंग बच्चे को खून करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। मालती मिश्रा के उपन्यास 'मंजरी" में जोशी परिवार के लोग हेमंत की तृतीय लिंग बेटी को त्यागने के लिए तैयार हो जाते हैं। उन्हें हेमंत की बेटी की भविष्य से ज्यादा अपने परिवार की इज्जत मुख्य मानते हैं। उस नादान तृतीय लिंग बच्चे की मुंह भी देखना नहीं चाहते हैं। नए जमाने में भी प्राचीन लोग जैसे अपने गौरव की चर्चा करते है। "हेमंत बहुत रोया, परंतु किसी ने ध्यान नहीं दिया, जोशियों को हेमंत के रोने से ज्यादा फिकर अपनी इज्जत की है। अगर सभी को पता चल गया तो वे लोग किसी को मुंह दिखाने के काबिल न रहते।"[7]

तृतीय लिंगी अपने शारीरिक बदलाव से बहुत उलझनों का सामना करते हैं। वे अपनी माँ-बाप, भाई, बहन, सह परिवारवालों, रिश्तेदारों से अलग कर दिये जाते हैं। इस सामाजिक विचारों से डरकर अपनी समस्याओं को किसी से भी नहीं बताते हैं। फिर भी अज्ञान के वजह बहुत सारे लोग उन्हें आहत करते हैं। तृतीय लिंग मेहनत कर स्वाभिमान से जीना चाहते हैं। लेकिन समाज अपने निंदा, कठोर वचन, गालियां देकर उन्हें बहुत परेशान करता है। नीरजा माधव के उपन्यास 'यमदीप' में नाजाबीबी अपनी वेदना को इस प्रकार प्रकट करती है। "जब हम धंधे पर नहीं होते बहनजी तो इस तरह की मजाक हमारे सीने में गोली की तरह लगाता है। हम आसमान से नहीं टपके है न? आप ही की तरह किसी माँ की कोख से जन्म है। हाड़ मांस के शरीर लिए। हमें तो अपने आप दुख होता है इस जीवन पर आप लोग भी दुखी कर देते हो।"[8]

निष्कर्ष:

आजकल तृतीय लिंग अपने आप को स्थापित करके समाज में मुख्य धारा में आ रहे हैं । आजकल तृतीय लिंग हर क्षेत्र में अपनी कुशलता प्रदर्शन कर रहे हैं । केंद्र सरकार और राज्य सरकार तृतीय लिंग के हालत में सुधार लाने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों, वर्कशॉप्स आदि आयोजित कर रहे हैं ।

संदर्भ

1. डॉ विनय कुमार पाठक, किन्नर-विमर्श दशा और दशा, भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 2019, पृष्ठ सं. 25
2. डॉक्टर अभिषेक सिंह, हिंदी कथा साहित्य में ट्रांसजेंडर, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम सं. 2022 पृ सं. 37
3. चित्र मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नं: 203 नालासोपारा सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, छठा सं 2020, पृष्ठ सं: 110
4. भगवंत अनमोल, जिंदगी 50-50, राजपाल एंड संज़, दिल्ली, प्र. सं 2017, पृ. सं. 153
5. महेंद्र भीष्म, मैं पायल, अमन प्रकाशन, कानपुर, चतुर्थ सं 2019, पृ संख्या 76
6. रेनू बहल, मेरे होने में क्या बुराई है, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र सं. 2020, पृ सं: 36
7. मालती मिश्रा, मंजरी, रश्मि प्रकाशन, लखनऊ, प्रथम संस्करण 2022, पृष्ठ सं 17
8. नीरजा माधव, यमदीप, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ सं: 50